FA - II
Subject :- Sanskrit
Class – VIII

पञ्चमः पाठः
विज्ञानस्य आविष्काराः

हिन्दी अनुवाद-

यह दूरदर्शन है। इसमें लोग न केवल सुनते हैं, बल्कि दृश्यों को भी देखते हैं।

यह आकाशवाणी है। इसकी सहायता से लोग कहीं भी जाते हुए गीतों एवं समाचारों को सुनते हैं।

यह टेलीफोन है। इसके माध्यम से दूसरे स्थानों पर या देश-विदेशों में लोग आपस में बातचीत करते हैं।

यह कंम्प्यूटर है। संगणक से काम शीघ्र होते हैं।

यह मेट्रोयान है। इसकी गति तेज होती है इसमें बैठकर लोग शीघ्र ही अपने गन्तव्य स्थानों पर चले जाते हैं।

यह प्रशीतक यंत्र (फ्रीज) है। इसमें रखे जाने वाले पदार्थ और भोजन हमेशा सुरक्षित रहते हैं जो भोजन या पदार्थ इसमें रखा जाता है, वह सभी शीतलहोताहै और लम्बे समय तक रहता है।

यह चलभाषयन्त्र (मोबाइल) है। इससे लोग कहीं भी जाते हुए दूर प्रदेशों पर स्थित लोगों से बातचीत कर सकते हैं। आधुनिक युग में यह यन्त्र सर्वव्यापक होकर लोगों के हितों की साधना कर रहा है।

यह हवाई जहाज है। इसमें बैठकर लोग पक्षी की तरह आकाश में उड़ सकते हैं। वे जल्दी ही अपने गन्तव्य स्थान पर चले जाते हैं।

पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए-

उत्तर -

(1) दूरदर्शनम् एकम् यन्त्रम् अस्ति येन वयम् समाचारान् अपि दूरस्थानि दृश्यानि पश्यामः।

(2) गीतानि आकाशवाणी - यन्त्रेण शृण्वन्ति।

(3) संगणकेन अस्माकम् सर्वाणि कार्याणि शीघ्रमेव सम्पादितानि भवन्ति।

(4) भोजनम् प्रशीतक - यन्त्रे चिरम् तिष्ठति।

(5) शीघ्रम् मेट्रो यानम् / वायुयानम् चलति।

(6) आकाशमार्गेण वायुयानम् गच्छति।

प्रश्न निर्माण -

(1) जनाः परस्परम् किम् कुर्वन्ति?

(2) भोजनम् अत्र कीदृशम् भवति?

(3) जनाः कानि अपि पश्यन्ति?

(4) जनाः खगाः इव कुत्र उत्पतन्ति?

(5) कुत्रापि गत्वा कस्य सहायतया जनाः वार्तालापम् कुर्वन्ति?

संस्कृत में अनुवाद -

(1) वयम् दूरदर्शनम् पश्यामः।

(2) ते / ताः आकाशवाण्या समाचारान् शृण्वन्तु।

(3) प्रशीतकयन्त्रे शीतलम् जलम् अस्ति।

(4) मेट्रो यानम् तीव्रम् धावति / चलति।

(5) यूयम् वायुयानेन गच्छत।

(6) वयम् संगणकस्य सहायतया पठामः।

(7) त्वम् मया सह चलभाषयन्त्रेण वार्तालापम् कुरु।

पाठ का नाम - विटपानाम् महत्त्वम्

हिन्दी अनुवाद

पैरा न०1. शुद्धः वायुः - - - - - परेभ्यः फलन्ति ।
अर्थ- शुद्ध वायु हमारे जीवन का आधार है। विशुद्ध पर्यावरण के लिए पौधे अत्यावश्यक होते हैं। वृक्ष कट कर भी पुनः उगते हैं। वे दूसरों के लिए फलते हैं।

पैरा न०2. वृक्षाः 'ऑक्सीजनं' - - - - - - - स्वस्थं भवति ।
अर्थ- वृक्ष 'ऑक्सीजन' नामक वायु प्रदान करके पर्यावरण को स्वस्थ करते हैं। वे मनुष्यों और पशु-पक्षियों से निकली दूषित वायु 'कार्बन डाई ऑक्साइड' को ग्रहण करते हैं और प्राणियों के लिए ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इससे पर्यावरण स्वस्थ होता है।

पैरा न०3. विटपाः पर्यावरणं - - - - जीवितुम् शक्नुवन्ति ।
अर्थ- वृक्ष पर्यावरण को संतुलित करते हैं। वे बादलों को वर्षा कराने में सहायक होते हैं। वे जल से भरे हुए बादलों को आकर्षित करते हैं। बादल भी वहीं बरसते हैं जहाँ वन होता है। पौधों से रहित स्थान पर वर्षा नहीं होती है। वर्षा का जल भूमि में कटाव करता है। वृक्ष ही उस मिट्टी को संरक्षित करने में समर्थ हैं। पौधे भूमि के जल को ग्रहण करते हैं। जल से वे जीवित रह सकते हैं।

पैरा न०4. विटपात् विविधानि - - - - - - - प्रयुक्तम् भवति ।
अर्थ- वृक्ष से विभिन्न प्रकार के फल और फूल प्राप्त होते हैं। उनकी त्वचा (छाल), जड़, पत्ते आदि औषधियों के भण्डार हैं। वृक्षों से लकड़ी प्राप्त होती है जो भवनों के निर्माण और भवन की सजावट में भी प्रयोग की जाती है। वृक्षों से प्राप्त लकड़ी जलावन के लिए भी प्रयुक्त होती है।

पैरा न०5. विटपानाम् हरीतिमा - - - - - अत्यावश्यकम् अस्ति ।
अर्थ- वृक्षों की हरियाली अत्यन्त ही सुंदर होती है। उनके फूलों एवं पत्तों की शोभा रमणीय होती है। वृक्षों पर बहुत

- से पक्षी निवास करते हैं। उनकी चहचहाहटें हमारे हृदयों को रस से विभोर कर देती हैं।

वृक्ष सज्जन व्यक्तियों की तरह हमेशा दूसरों की भलाई के लिए अपने फलों को देते हैं। वे छाया करते हैं। उनका शरीर जड़ से सिर तक दूसरों के लिए होता है। आजकल वृक्षों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

अभ्यास कार्यम्

प्रश्न 2. एकपदेन उत्तरत (एक पद में उत्तर दीजिए)

(i) अस्माकम् जीवनस्य आधारः कः?

उत्तर- विटपः / वृक्षः

(ii) वृक्षाः केभ्यः फलन्ति?

उत्तर- प्राणिभ्यः

(iii) विटपाः किम् गृह्णन्ति?

उत्तर- कार्बन डाईऑक्साइड वायुम्

(iv) विटपाः कस्मात् जलम् गृह्णन्ति?

उत्तर- भूमेः

(v) केषाम् हरीतिमा शोभना भवति?

उत्तर- वृक्षाणाम्

(vi) अधुना वयं किं कुर्मः?

उत्तर- वृक्षसंरक्षणम्

प्रश्न 3. पूर्णवाक्येन उत्तरत (पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए)

(i) विटपात् किम्-किम् प्राप्तम् भवति?

उत्तर विटपात् फलानि, पुष्पाणि, पत्राणि, काष्ठम्, इन्धनम्, त्वक्, मूलं च प्राप्तम् भवति।

(ii) मेघाः कदा वर्षन्ति?

उत्तर- यदा वृक्षाः भवन्ति तदा मेघाः वर्षन्ति।

(iii) विटपाः कीदृशाः भवन्ति?

उत्तर- विटपाः सत्पुरुषाः इव भवन्ति। ते परोपकाराय एव जीवन्ति।

प्रश्न 4. वाक्यानि रचयत (वाक्यों की रचना कीजिए)

यथा- (i) बीजम् अस्ति, वृक्षः भविष्यति।

बीजम् → अंकुरः → वृक्षः
बीजात् अंकुरः भवति।
अंकुरात् वृक्षः भवति।

(ii) कलिका अस्ति, फलम् भविष्यति।
कलिका → पुष्पम् → फलम्
कलिकायाः पुष्पम् भवति।
पुष्पात् फलम् भवति।

(iii) वृक्षः अस्ति, ईंधनम् भविष्यति।
वृक्षः → काष्ठम् → ईंधनम्
वृक्षात् काष्ठम् भवति।
काष्ठात् ईंधनम् भवति।

(iv) ईंधनम् अस्ति, भोजनम् खादिष्यति।
ईंधनम् → अन्नम् → भोजनम्
ईंधनात् अन्नम् सिद्धम् भवति।
अन्नात् भोजनम् भवति।

प्रश्न 6. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा पाठमाधृत्य 'आम्' न वा लिखत।

(i) वृक्षाः शुद्धम् वायुम् गृह्णन्ति। — न
(ii) विटपाः छिन्नाः अपि पुनः रोहन्ति। — आम्
(iii) पादपशून्य-स्थाने वर्षा भवति। — न
(iv) जलेन विटपाः जीवितुम् शक्नुवन्ति। — आम्
(v) वृक्षाणाम् संरक्षणम् अत्यावश्यकम् अस्ति। — आम्

प्रश्न 7. विशेष्याणि विशेषणैः सह मेलयत।
(विशेष्य को विशेषण के साथ मिलाइए)

उत्तरम् -
(i) शुद्ध — (i) वायुः
(ii) जलपूरिताः — (ii) मेघाः
(iii) हरितानाम् — (iii) विटपानाम्
(iv) बहवः — (iv) पक्षिणः
(v) मधुरम् — (v) जलम्

पाठ का नाम - अपात्रोपदेशस्य फलम्

हिन्दी अनुवाद

पैराग्राफ 1. एकस्या: नद्या: तीरे ------ निवसन्ति स्म।
अर्थ- एक नदी के तट पर एक विशाल जामुन का पेड़ था। वृक्ष पर अनेक घोंसले थे जिनमें विभिन्न प्रकार के पक्षी अपने-अपने छोटे बच्चों के साथ सुखपूर्वक निवास किया करते थे। उनके साथ कुछ बंदर भी वहीं निवास करते थे। बंदर वृक्ष की टहनियों पर निवास किया करते थे।

पैराग्राफ 2. कालान्तरे वर्षर्तु: ------ स्थितवन्त:।
अर्थ- कालान्तर में वर्षा ऋतु आयी। एक दिन आकाश से मूसलधार जल बरसने लगा। सभी पक्षी अपने-अपने घोंसलों में सुख से थे। अनेक जानवर वर्षा से अपनी रक्षा करने के लिए वृक्ष के नीचे आ गए। ठण्ड से काँपते हुए बंदर भी वहाँ ठहर गए।

पैराग्राफ 3. वर्षाया: जलेन ------ भविष्यथ इति।"
अर्थ- वर्षा के जल से गीले और काँपते हुए बंदरों को देखकर अपने घोंसले से एक चिड़िया उनसे बोली- "मनुष्य की तरह तुम्हारे हाथ और पैर हैं, अत: अपने आश्रय की रचना क्यों नहीं कर लेते हो? हम सब शक्तिहीन होकर भी अपने घरों की रचना करके सुख से रहते हैं। तुम लोग भी शीत (ठण्ड), धूप और वर्षा से सुरक्षित रहोगे।"

पैराग्राफ 4. धृष्टा: वानरा: ------ न वदेत्।
अर्थ- उदण्ड / अशिष्ट बंदर तुच्छ पक्षी को उपदेश देने वाला देखकर क्रोधित हो गये। "यह तुच्छ चिड़िया हमलोगों को उपदेश दे रही है"- इससे क्रोधित होकर बंदरों ने वृक्ष पर जाकर सभी पक्षियों के घोंसलों को नष्ट कर दिया। सभी पक्षी दु:खी हो गए। अत: सत्य ही कहा गया है-
मूर्ख व्यक्तियों को उपदेश देना उनके क्रोध को बढ़ाना

होता है, न कि शान्ति के लिए। जैसे कि साँपों को दूध पिलाना केवल उनके विष में वृद्धि का कारण बनता है।
इसलिए "अयोग्य या मूर्ख प्राणियों या व्यक्तियों को कभी भी उपदेश-वचन नहीं बोलना चाहिए।"

अभ्यास कार्यम्

लिखितम्

प्रश्न 2. प्रश्नान् पूर्णवाक्येन उत्तरत (प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए)

(i) खगाः कैः सह निवसन्ति स्म?
उत्तर- खगाः स्वैः शावकैः सह निवसन्ति स्म।

(ii) खगाः कुत्र निवसन्ति स्म?
उत्तर- खगाः एकस्मिन् जम्बूवृक्षे निवसन्ति स्म।

(iii) कस्मात् जलम् अवर्षत्?
उत्तर- आकाशात् जलम् अवर्षत्।

(iv) का वानरान् अवदत्?
उत्तर- एका चटका वानरान् अवदत्।

(v) वर्षर्तौ किम् अभवत्?
उत्तर- वर्षर्तौ वृष्टिः अभवत्।

(vi) चटका किम् अवदत्?
उत्तर- चटका अवदत् - " युष्माकम् मनुष्यस्य इव हस्तपादौ स्तः। स्व-आश्रयं किमर्थम् न रचयथ? वयम् निर्बलाः अपि स्वगृहाणि रचयित्वा सुखेन निवसामः। यूयम् अपि शीतात्, आतपात् वर्षायाः च सुरक्षिताः भविष्यथ इति।"

(vii) वानराः किम् अकुर्वन्?
उत्तर- वानराः कुपिताः भूत्वा वृक्षम् गत्वा सर्वेषाम् खगानाम् नीडानि अनश्यन्।

प्रश्न 4. रिक्त स्थानानि पूरयत (रिक्त स्थान पूरे कीजिए)

(i) वृक्षे अनेकानि नीडानि आसन्।
(ii) एकदा वर्षर्तुः आगच्छत्।
(iii) युष्माकम् मनुष्यस्य इव हस्तपादौ स्तः।
(iv) बुद्धा यूयम् अस्मान् उपदिशतीति।
(v) खगाः दुखिताः अभवन्।
(vi) अपात्रेभ्यः कदापि उपदेश-वचनम् न वदेत्।

प्रश्न 6. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठित्वा पाठानुसारम् यथाक्रमम् संयोजनम् कुरुत।
(नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़कर पाठ के अनुसार यथाक्रम संयोजित कीजिए।)

उत्तर- (i) एकदा धारासारैः जलम् अवर्षत्। [3]
(ii) खगाः स्वनीडेषु निवसन्ति स्म। [2]
(iii) खगाः दुःखिताः अभवन्। [7]
(iv) अपात्रेभ्यः कदापि उपदेश-वचनम् न वदेत्। [8]
(v) यूयम् स्व-आश्रयं किमर्थम् न रचयथ? [5]
(vi) नद्याः तीरे जम्बूवृक्षः आसीत्। [1]
(vii) वानराः नीडानि अनश्यन्। [6]
(viii) जलेन कम्पमानाः वानराः वृक्षस्य अधः अतिष्ठन्। [4]

****